हार की जीत

सुदर्शन

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत को देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था । भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता । वह घोड़ा बहुत सुंदर और बलवान था, इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था । बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे । ऐसी लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यार को भी न चाहता होगा । उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था - रुपया, माल-असबाब, ज़मीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से घृणा थी । अब गाँव से बाहर एक छोटे मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे । परंतु 'सुलतान' से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी । मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा-उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी । वे उसकी चाल पर लट्टू थे । कहते, ऐसे चलता है, जैसे मोर घन-घटा को देखकर नाच रहा हो । गाँव के लोग इस प्रेम को देखकर चकित थे । जब तक संध्या समय 'सुलतान' पर चढ़कर चौदह-पंद्रह किलोमीटर का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता ।

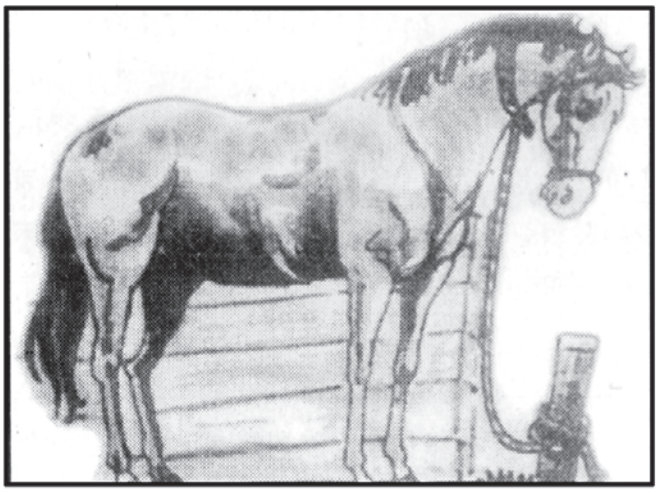

खड्ग सिंह इस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे । होते-होते 'सुलतान' की कीर्ति उसके कानों तक पहुँची । उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा । वह एक दिन, दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और 'दंडवत्' करके बैठ गया ।

बाबा भारती ने पूछा - ''खड्ग सिंह, क्या हाल है ? कहो इधर कैसे आ गए ?''

''सुलतान की चाह खींच लाई,'' खड्ग सिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया ।

''विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है ।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी ।''

''कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है ।''

''क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है ।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी; आज उपस्थित हो सका हूँ ।''

बाबा और खड्ग सिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्ग सिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से । उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था । सोचने लगा, भाग्य की बात है । ऐसा घोड़ा खड्ग सिंह के पास होना चाहिए था, इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ ? हृदय में हलचल होने लगी । बालकों की-सी अधीरता से बोला- ''परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा !''

बाबाजी भी मनुष्य थे । अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया । घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे । एकाएक उचककर सवार हो गये । घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा । उसकी चाल देखकर खड्ग सिंह के हृदय पर साँप लोट गया । वह डाकू था; और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर अपना अधिकार समझता था । जाते-जाते उसने कहा, ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा ।''

बाबा भारती डर गये । अब उन्हें रात को नींद नहीं आती थी । सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी । प्रतिक्षण खड्ग सिंह का भय बना रहता । परंतु कई मास बीत गये और वह न आया । यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ-कुछ लापरवाह हे गये ।

संध्या का समय था । बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे । इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता । मन में फूले न समाते थे ।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, ''ओ बाबा ! इस कँगले की भी बात सुनते जाना ।''

आवाज़ में करुणा थी । बाबा ने घोड़े को थाम लिया । देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है । बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?'' अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखी हूँ । मुझ पर दया करो । रामावाग यहाँ से चार किलोमीटर है, मुझे वहाँ जाना है । घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा !''

''वहाँ तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा । मैं उनका सौतेला भाई हूँ ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे ।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिये जा रहा है । उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से चीख निकल गई । यह अपाहिज खड्ग सिंह डाकू था ।

बाबा भारती कुछ देर चुप रहे और उसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ ।''

खड्ग सिंह ने घोड़ा रोक लिया और कहा, ''बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा ।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ ।''

खड्ग सिंह ठहर गया । बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका । मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा । परंतु खड्ग सिंह ! केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा ।''

''बाबाजी, आज्ञा दीजिए । मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा अब न दूँगा ।''

''अब घोड़े का नाम न लो, मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा । मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।''

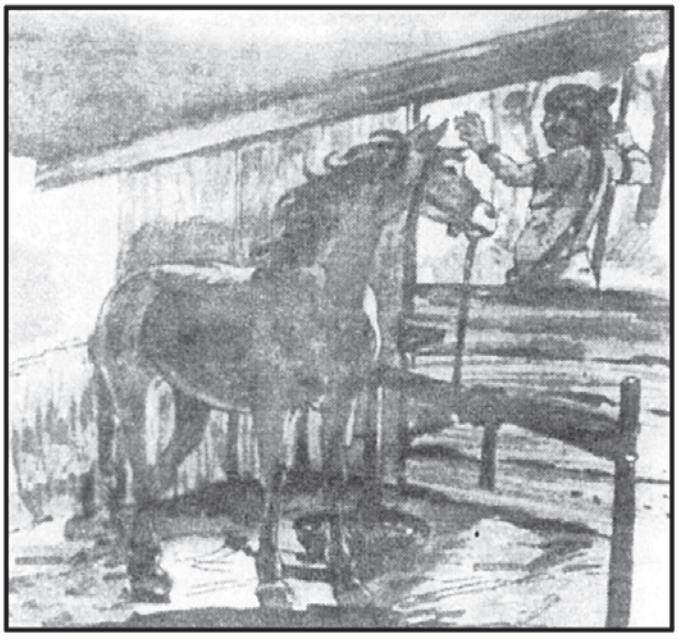

यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न था । बाबा भारती चले गये, परंतु उनके शब्द खड्ग सिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे । सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं ! कैसा पवित्र भाव है ! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था । इसे देखकर उनका मुँह फूल की नाईं खिल जाता था । इसकी रखवाली में वे कई रात सोये तक नहीं । परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी । केवल यह ध्यान था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें । ऐसा मनुष्य मनुष्य नहीं, देवता है ।

रात्रि के अधंकार में खड्ग सिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा । चारों ओर सन्नाटा था । आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे । थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे । मंदिर के अंदर कोई शब्द न सुनाई देता था । खड्ग सिंह 'सुलतान' की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा । फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह खुला था । किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था । हानि ने उन्हें हानि की ओर से बेपरवाह कर दिया था । खड्ग सिंह ने आगे बढ़कर 'सुलतान' को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया । इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे ।

रात्रि का चौथा पहर समाप्त होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से निकलकर जल से स्नान किया । उसके पश्चात उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े । परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई । वे वहीं रुक गए ।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से ही अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया । वह जोर से हिनहिनाया ।

बाबा भारती दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछुड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात पुत्र से मिलकर रोता है । बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थकपियाँ देते और कहते, ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा ।''

थोड़ी देर बाद जब वे अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे । वे आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह पर गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्ग सिंह खड़ा होकर रोया था। दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया ।

विचारबोध :- *'हार की जीत' कहानी डाकू के हृदय में देवता के निवास की घोषणा करती है । खूंखार डाकू खड्ग सिंह की असद्वृत्ति को सद्वृत्ति में परिवर्त्तित करने में बाबा भारती की उक्ति प्रभावशाली और भावोद्दीपक है । अंत में डाकू की आत्मा जाग उठती है । प्रस्तुत कहानी यथार्थ से आदर्श की ओर अग्रसर होते हुए समाज सुधार और राष्ट्रहित के लिए अनमोल संदेश देती है ।*

- शब्दार्थ -

खरहरा - एक दाँतेदार कंघी जिससे घोड़ों के रोएँ साफ किए जाते हैं । असहाय - जिसका कोई सहारा न हो । चैन - शांति । छवि - सुन्दरता । बाँका - सुन्दर । लापरवाह - जो सावधान न हो । कँगले - दीन, दरिद्र । कराह - दर्द के कारण मुख से निकलने वाली आह या चीख । सन्नाटा - नीरवता । वियोग - बिछड़ा हुआ । हानि - नुकसान । चाप - जमीन पर पैर पड़ने का शब्द । मिलाप - मिलने का भाव । कीर्त्ति - यश, ख्याति । एकाएक - सहसा । अधीर - व्याकुल । करुणा - दया । अपाहिज - विकलांग । अभिलाषा - इच्छा । नेकी - भलाई ।

प्रश्न और अभ्यास

1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) डाकू खड्ग सिंह कैसे सुलतान को अपने कब्जे में ले लेता है ?

(ii) डाकू खड्ग सिंह का हृदय परिवर्तन क्यों और कैसे हुआ ?

(iii) हार कर भी कौन जीता और जीतकर भी कौन हारा ? इस पर अपने विचार युक्तिपूर्वक लिखिए ।

(iv) संसार त्यागी बाबा भारती का सुलतान के प्रति विशेष लगाव और प्रेम क्यों था ?

(v) ''मैं आपके पास यह घोड़ा न रहने दूँगा''- खड्ग सिंह की यह उक्ति सुनकर बाबा भारती की क्या दशा हुई ?

(vi) घोड़ा हथियाने के बाद जाते हुए खड्ग सिंह को रोक कर बाबा भारती ने क्या कहा ? बाबा भारती की बात का खड्ग सिंह पर क्या प्रभाव पडा ?

भाषा ज्ञान

2. (i) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

पुत्र, साँप, घोड़ा, अपाहिज, प्रयोजन, गरीब, मिथ्या

(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए –

प्रशंसा, पसंद, शाम, कंगाल, आज, बलवान, सच्चा, प्रेम,

(iii) **निम्नलिखित शब्दों के पूर्व 'अ' लगाकर विलोम शब्द बनाइए -**
सावधान, प्रसन्न, स्वीकार, विश्वास, स्पष्ट, शांत, सह्य, सुंदर, स्वाभाविक, पवित्र, प्रसिद्ध

(iv) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए –**
गिरना, खाना, दौड़ना, चढ़ना, सोना, हँसना

3. **किसने किससे कहा -**

(i) ''विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।''

(ii) ''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा ।''

(iii) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । लोगों को इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।''

(iv) ''कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसे पवित्र भाव हैं ।''

(v) ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा ।''

4. डाकू अंगुलिमाल की कहानी अपने शिक्षक से सुनिए और समझने का प्रयास कीजिए कि इस कहानी के साथ उस कहानी की क्या समानता है ?

●